



॥ श्री परमपूज्य परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीवासुदेवानन्द सरस्वती विरचितं  
मंत्रगर्भ श्री दत्तात्रेयाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रं ॥

## ।। श्री दत्तात्रेयाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ।।

|  |   |        |
|--|---|--------|
| ॐकार तत्त्वरूपाय दिव्यज्ञानात्मने नमः।     | नभोतीतमहाधाम्न ऐन्द्र्या ओजसे नमः       | ॥ १ ॥  |
| नष्टमत्सरगम्याया- गंयाचारात्मवर्त्मने।     | मोचितामेध्यकृतये ङ्ही बीज श्राणितश्रिये | ॥ २ ॥  |
| मोहादि विभ्रमांताय बहुकायधराय च ।          | भक्तदुर्वैभवछेत्रे क्लीं बीज वरजापिने   | ॥ ३ ॥  |
| भवहे- तुविनाशाय राजच्छोणाधराय च ।          | गतिप्रकंपितांडाय चारुव्यहृत बाहवे       | ॥ ४ ॥  |
| गतग- र्वप्रियायास्तु यमादियतचेतसे।         | वशिताजातवश्याय मुंडिने अनसूयवे          | ॥ ५ ॥  |
| वदद्व- रेण्यवाग्जाला-विस्पृष्टविविधात्मने। | तपोधनप्रसन्नाये-डापतिस्तुतकीर्तये       | ॥ ६ ॥  |
| तेजोमण्यंतरंगाया-द्वरसद्मविहापने।          | आंतरस्थानसंस्थायायैश्वर्यश्रौतगीतये     | ॥ ७ ॥  |
| वातादिभययुग्भाव-हेतवे हेतुबेतवे।           | जगदात्मात्मभूताय विद्विषत्षड्घातिने     | ॥ ८ ॥  |
| सुरव-गोद्धृते भृत्या असुरावासभेदिने।       | नेत्रे च नयनाक्षणे चिच्चेतनाय महात्मने  | ॥ ९ ॥  |
| देवाधि देवदेवाय वसुधासुरपालिने।            | याजिनामग्रगण्याय द्रांबीजजपतुष्टये      | ॥ १० ॥ |
| वासना वनदावाय धूलियुग्देहमालिने।           | यतिसंन्यासिगतये दत्तात्रेयेति संविदे    | ॥ ११ ॥ |
| यजनास्यभुजेजाय तारकावासगामिने।             | महाजवास्पृग्रूपाया-त्ताकाराय विरूपिणे   | ॥ १२ ॥ |
| नराय धीप्रदीपाय यशस्विशशसे नमः।            | हारिणे चोज्वलांगायात्रेस्तनूजाय संभवे   | ॥ १३ ॥ |
| मोचितामरसंधाय धीमतां धीरकाय च।             | बलिष्ठविप्रलभ्याय यागहोमप्रियाय च       | ॥ १४ ॥ |
| भजन्महिमविरव्यात्रेऽमरारिमहिमच्छिदे।       | लाभाय मुंडिपूज्याय यमिने हेममालिने      | ॥ १५ ॥ |
| गतोपाधिव्याधये च हिरण्याहितकांतये।         | यतीन्द्रचर्या दधते नरभावौषधाय च         | ॥ १६ ॥ |
| वरिष्ठ योगिपूज्याय तंतुसंतन्वते नमः।       | स्वात्मगाथासुतीर्थाय मःश्रिये षट्कराय च | ॥ १७ ॥ |
| तेजोमयोत्तमांगाय नोदनानोद्यकर्मणे।         | हान्याप्तिमृतिविज्ञात्र ओंकारितसुभक्तये | ॥ १८ ॥ |
| रुक्षुङ्मनःखेदहृते दर्शनाविषयात्मने ।      | रांकवाततवस्त्राय नरतत्त्वप्रकाशिने      | ॥ १९ ॥ |
| द्रावितप्रणताघाया-त्तःस्वजिष्णुःस्वराशये।  | राजन्व्यास्यैकरूपाय मःस्थायमसुबंधवे     | ॥ २० ॥ |
| यतये चोदनातीत- प्रचारप्रभवे नमः।           | मानरोषविहीनाय शिष्यसंसिद्धिकारिणे       | ॥ २१ ॥ |

गंगे पादविहीनाय चोदनाचोदितात्मने। यवीयसेऽलर्कदुःख- वारिणेऽखंडितात्मने ॥ २२ ॥  
ऋषीबीजायार्जुनज्येष्ठाय दर्शनादर्शितात्मने। नतिसंतुष्टचित्ताय यतिने ब्रह्मचारिणे ॥ २३ ॥  
इत्येष सत्स्तवो वृत्तोयात् कं देयात्प्रजापिने। मस्करीशो मनुस्यूतः परब्रह्मपदप्रदः ॥ २४ ॥

॥ इति श्री परमपूज्य परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीवासुदेवानन्द सरस्वती  
विरचितं मंत्रगर्भ श्री दत्तात्रेयाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

This Mantra Garbha Dattatreya Ashtottara is one of the finest works of Datta avatari Parama pujya Sri Sri Sri Vasudevaananda Saraswathi Maharaj.

If the reader sees this pdf , on arranging each shloka in a single line ( both purva and utara ardha);we can observe that by arranging 1st, 4th 9th 17th and 25 th aksharas of each shloka column wise in entire document, we get several popular mahamantras like

- 1.Om Namō Bhagavate Vaasudevaaya (highlighted by orange colour ),
2. Namō Bhagavate Rudraya(pink) ,
- 3.Famous Vishwamitra Gayatri mantra (in red),
- 3 Datta Gayatri, (in blue)
- 4 Anjaneya mantra, (in Dark red)
- 5.Rama Shadakshari, ( in Green)
- 6.Navaarna mantra of chandi , (in Blue)
- 7.Dattareya Ashtakshari mantra (in Pink)and
8. Shiva Panchakshari . (in red)

At certain places words are hyphenated in between intentionally to show these embedded mahamantras.

This work clearly displays Swamiji's genius and intuition in composing Stotras.